UP Board Class 10 Hindi 2026 Question Paper with Solutions

Time Allowed :3 Hours	Maximum Marks :70	Total Questions :28

सामान्य निर्देश :

निर्देश :

1. प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।
2. प्रश्नपत्र दो खंडो (अ) तथा खण्ड (ब) में विभाजित हैं।
3. प्रश्नपत्र के खण्ड (अ) में बहुविकल्पीय प्रश्न हैं जिसमें सही विकल्प का चयन करके O.M.R. शीट पर नीले अथवा काले बाल प्वाइंट पेन से सही विकल्प वाले गोले को पूर्ण रूप से काला करें।
4. खण्ड (अ) में बहुविकल्पीय प्रश्न हेतु प्रत्येक प्रश्न के लिए (01) अंक निर्धारित हैं।
5. प्रश्नपत्र के खण्ड (अ) के प्रश्नों हेतु 1 घंटा तथा खण्ड (ब) के प्रश्नों को हल करने हेतु 2 घण्टे का समय निर्धारित हैं।
6. प्रत्येक प्रश्न के सम्मुख उनके निर्धारित अंक दिये गये हैं।

---

1. हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ निबंधकार आलोचक एवं इतिहासकार के रूप में जाने जाते है

(A) बालकृष्ण भट्ट
(B) पदुमलाल पुन्नालाल 'बख्शी'
(C) रामचन्द्र शुक्ल
(D) इनमे से कोई नहीं

Correct Answer: (C) रामचन्द्र शुक्ल

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न हिन्दी साहित्य के प्रमुख लेखकों की बहुमुखी प्रतिभा और उनकी साहित्य श्रेणियों की पहचान से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में मील का पत्थर माने जाते हैं।
उन्होंने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' (1929) लिखकर साहित्य के काल-विभाजन को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।
वे एक प्रखर आलोचक और निबंधकार भी थे, जिनका प्रसिद्ध निबंध संग्रह 'चिन्तामणि' है।
अत: उन्हें श्रेष्ठ निबंधकार, आलोचक और इतिहासकार तीनों विधाओं का ज्ञाता माना जाता है।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (C) रामचन्द्र शुक्ल है।

Quick Tip

आचार्य शुक्ल को 'कठिन काव्य का प्रेत' नहीं, बल्कि 'हिन्दी साहित्य का इतिहासकार' और 'आलोचक' के रूप में मुख्य रूप से याद रखें।

---

2. महादेवी वर्मा द्वारा रचित रेखाचित्र है

(A) जिन्दगी मुस्कुराई
(B) अतीत के चलचित्र
(C) गाँव की साँझ
(D) बाजे पायलिया के घुँघरू

Correct Answer: (B) अतीत के चलचित्र

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न महादेवी वर्मा की गद्य रचनाओं और उनकी विधाओं (रेखाचित्र) की पहचान पर आधारित है।

Step 2: Detailed Explanation:
महादेवी वर्मा छायावाद की प्रमुख कवयित्री के साथ-साथ एक उत्कृष्ट रेखाचित्रकार भी थीं।
'अतीत के चलचित्र' (1941) उनका प्रमुख रेखाचित्र संग्रह है जिसमें उन्होंने अपने जीवन के पात्रों का सजीव वर्णन किया है।
अन्य विकल्प जैसे 'जिन्दगी मुस्कुराई' और 'बाजे पायलिया के घुँघरू' कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' की रचनाएँ हैं।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (B) अतीत के चलचित्र है।

Quick Tip

महादेवी वर्मा के अन्य रेखाचित्रों 'स्मृति की रेखाएं' और संस्मरण 'पथ के साथी' को भी अक्सर परीक्षाओं में पूछा जाता है।

---

3. 'कोणार्क' के रचनाकार हैं

(A) जगदीश माथुर
(B) रामकुमार वर्मा
(C) जयशंकर प्रसाद
(D) विजय प्रभाकर

Correct Answer: (A) जगदीश माथुर

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न हिन्दी के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटकों और उनके रचनाकारों से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:
'कोणार्क' जगदीश चन्द्र माथुर का प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक है।
यह नाटक उड़ीसा के सूर्य मंदिर (कोणार्क) के निर्माण और उसके शिल्पियों के संघर्ष की कहानी पर आधारित है।
डॉ. रामकुमार वर्मा एकांकी के लिए और जयशंकर प्रसाद अपने ऐतिहासिक नाटकों (जैसे चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त) के लिए प्रसिद्ध हैं।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (A) जगदीश माथुर है।

Quick Tip

जगदीश चन्द्र माथुर के अन्य महत्वपूर्ण नाटकों में 'शारदीया' और 'पहला राजा' का नाम प्रमुख है।

---

4. 'चलो चाँद पर चलें' के रचनाकार हैं

(A) धर्मवीर भारती
(B) जयप्रकाश 'भारती'
(C) 'अज्ञेय'
(D) मोहन राकेश

Correct Answer: (B) जयप्रकाश 'भारती'

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न हिन्दी के विज्ञान साहित्य और बाल साहित्य के लेखकों की पहचान पर आधारित है।

Step 2: Detailed Explanation:
'चलो चाँद पर चलें' जयप्रकाश 'भारती' की एक प्रसिद्ध विज्ञान विषयक पुस्तक है।

जयप्रकाश 'भारती' ने बच्चों के लिए विज्ञान को सरल भाषा में समझाने के लिए कई पुस्तकें लिखीं। उन्होंने लम्बे समय तक 'नन्दन' पत्रिका का संपादन भी किया था।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (B) जयप्रकाश 'भारती' है।

Quick Tip

जयप्रकाश 'भारती' को हिन्दी में विज्ञान और बाल साहित्य को लोकप्रिय बनाने के लिए जाना जाता है।

---

5. 'तूफानों के बीच' रचना की विधा है

(A) कहानी
(B) उपन्यास
(C) एकांकी
(D) रिपोर्ताज

Correct Answer: (D) रिपोर्ताज

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न गद्य की विधाओं के वर्गीकरण और ऐतिहासिक घटनाओं के दस्तावेजीकरण से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:
'तूफानों के बीच' डॉ. रांगेय राघव द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध रिपोर्ताज है।
इसमें 1943 के बंगाल के भीषण अकाल का अत्यंत संवेदनशील और यथार्थवादी चित्रण किया गया है।
रिपोर्ताज विधा में किसी घटना का आंखों देखा हाल समाचार पत्र की शैली में परंतु साहित्यिक पुट के साथ लिखा जाता है।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (D) रिपोर्ताज है।

Quick Tip

रांगेय राघव का यह रिपोर्ताज हिन्दी साहित्य में अकाल की विभीषिका पर लिखे गए सबसे श्रेष्ठ दस्तावेजों में से एक है।

---

6. 'केशवदास' किस काल के कवि हैं ?

(A) आदिकाल
(B) रीतिकाल
(C) भक्तिकाल
(D) आधुनिक काल

Correct Answer: (B) रीतिकाल

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न हिन्दी साहित्य के इतिहास के कालखंडों और उनके प्रतिनिधि कवियों की पहचान पर आधारित है।

Step 2: Detailed Explanation:
आचार्य केशवदास को रीतिकाल का प्रवर्तक माना जाता है।
यद्यपि इनका समय भक्तिकाल के अंत से जुड़ा है, परंतु इनकी काव्य प्रवृत्तियाँ (अलंकारप्रियता, रीतिबद्धता) शुद्ध रूप से रीतिकालीन हैं।
उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ 'रामचन्द्रिका', 'कविप्रिया' और 'रसिकप्रिया' हैं।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (B) रीतिकाल है।

Quick Tip

केशवदास को उनकी क्लिष्ट भाषा के कारण आचार्य शुक्ल ने 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा था।

---

7. 'भारत-भारती' के रचनाकार हैं

(A) मैथिलीशरण गुप्त
(B) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(C) माखनलाल चतुर्वेदी
(D) सूरदास

Correct Answer: (A) मैथिलीशरण गुप्त

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न राष्ट्रीय चेतना की प्रमुख काव्य कृतियों और उनके रचयिताओं से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:
'भारत-भारती' (1912) मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध काव्य कृति है।
इस पुस्तक में भारत के गौरवमयी अतीत का गान करते हुए वर्तमान की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डाला गया है और भविष्य के लिए प्रेरित किया गया है।
इसी कृति के कारण महात्मा गांधी ने गुप्त जी को 'राष्ट्रकवि' की उपाधि दी थी।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (A) मैथिलीशरण गुप्त है।

Quick Tip

'भारत-भारती' स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय राष्ट्रवादियों की गीता मानी जाती थी।

---

8. 'भारतेन्दु युग' की समयावधि है

(A) सन् 1900 से 1928 ई० तक
(B) सन् 1868 से 1900 ई० तक
(C) सन् 1919 से 1992 ई० तक
(D) सन् 1800 से 1826 ई० तक

Correct Answer: (B) सन् 1868 से 1900 ई० तक

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रथम युग के काल-निर्धारण से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:
हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के प्रथम चरण को भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाम पर 'भारतेन्दु युग' कहा जाता है।
विद्वानों के अनुसार, भारतेन्दु की 'कविवचन सुधा' पत्रिका के प्रकाशन (1868 ई०) से लेकर सरस्वती पत्रिका के प्रारंभ (1900 ई०) तक के काल को भारतेन्दु युग माना जाता है।
1900 ई० के बाद का समय द्विवेदी युग कहलाता है।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (B) सन् 1868 से 1900 ई० तक है।

Quick Tip

भारतेन्दु युग को 'पुनर्जागरण काल' (Renaissance Period) भी कहा जाता है।

9. 'सुमित्रानन्दन पन्त' की रचना नहीं है

(A) ग्राम्या
(B) स्वर्णधूलि
(C) कामायनी
(D) युगान्त

Correct Answer: (C) कामायनी

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न प्रमुख कवियों और उनकी कृतियों के मध्य विभेद करने पर आधारित है।

Step 2: Detailed Explanation:
'कामायनी' छायावाद के प्रमुख स्तम्भ जयशंकर प्रसाद का कालजयी महाकाव्य है।
'ग्राम्या', 'स्वर्णधूलि' और 'युगान्त' सुमित्रानन्दन पन्त की प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं।
पन्त जी को 'प्रकृति का सुकुमार कवि' भी कहा जाता है।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (C) कामायनी है।

Quick Tip

छायावाद के चार प्रमुख कवि हैं: प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी वर्मा। इनकी रचनाओं का मेल अक्सर पूछा जाता है।

10. 'रीतिमुक्त' काव्यधारा के कवि हैं

(A) बिहारीलाल
(B) पद्माकर
(C) केशवदास
(D) घनानन्द

Correct Answer: (D) घनानन्द

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
रीतिकाल में तीन प्रकार की काव्यधाराएँ थीं : रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त।

Step 2: Detailed Explanation:
रीतिमुक्त कवि वे थे जिन्होंने काव्यशास्त्रीय नियमों (लक्षण-ग्रंथों) का पालन न कर स्वच्छंद रूप से हृदय के भावों को लिखा।
घनानन्द रीतिमुक्त काव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ और प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं।
बिहारीलाल 'रीतिसिद्ध' कवि हैं, जबकि केशवदास और पद्माकर 'रीतिबद्ध' कवियों की श्रेणी में आते हैं।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (D) घनानन्द है।

Quick Tip

रीतिमुक्त कवियों में चार नाम प्रमुख हैं: घनानन्द, बोधा, आलम और ठाकुर।

---

11. हा ! रघुनन्दन प्रेम परांते। तुम बिन जियत बहुत दिन बीते।। उपर्युक्त पंक्तियों में प्रयुक्त रस है

(A) वीर रस
(B) हास्य रस
(C) करुण रस
(D) रौद्र रस

Correct Answer: (C) करुण रस

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
रस की पहचान काव्य पंक्तियों में निहित स्थायी भाव के आधार पर की जाती है।

Step 2: Detailed Explanation:
दी गई पंक्तियों में 'शोक' का भाव प्रकट हो रहा है।
नायक के प्रति पुकार और 'तुम बिन जियत' जैसे शब्दों से वियोग और अत्यंत दुख का बोध हो रहा है।
जहाँ किसी इष्ट या प्रिय वस्तु के विनाश या विरह के कारण हृदय में दुख उत्पन्न होता है, वहाँ 'करुण रस' होता है जिसका स्थायी भाव 'शोक' है।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (C) करुण रस है।

Quick Tip

करुण रस की पहचान हेतु 'हा !', 'विशाल', 'रोदन', 'शोक' जैसे शब्दों पर ध्यान दें।

12. "ज्यों आँखिनु सब देखियै, आँख न देखी जाँहि।" उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?

(A) उपमा अलंकार
(B) रूपक अलंकार
(C) श्लेष अलंकार
(D) उत्प्रेक्षा अलंकार

Correct Answer: (D) उत्प्रेक्षा अलंकार

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
अलंकार काव्य की सुंदरता बढ़ाने वाले तत्व हैं। यहाँ अर्थ के चमत्कार द्वारा अलंकार पहचाना जा सकता है।

Step 2: Detailed Explanation:
इस पंक्ति में कवि कह रहा है कि जिस प्रकार (ज्यों) आँखों से सब कुछ देखा जाता है, पर आँखें स्वयं को नहीं देख पातीं।
यहाँ 'ज्यों' वाचक शब्द का प्रयोग उदाहरण या संभावना व्यक्त करने के लिए किया गया है।
यद्यपि यह 'दृष्टान्त' अलंकार का भी उत्कृष्ट उदाहरण है, परंतु दिए गए विकल्पों में 'ज्यों' वाचक शब्द के आधार पर इसे 'उत्प्रेक्षा' की श्रेणी में रखा जाता है।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (D) उत्प्रेक्षा अलंकार है।

Quick Tip

मनु, मानो, जनु, जानो, ज्यों, इव - ये शब्द उत्प्रेक्षा अलंकार की पहचान के प्रमुख वाचक शब्द हैं।

---

13. 'सोरठा' छन्द के पहले एवं तीसरे चरण में मात्राएँ होती हैं

(A) 13-11 मात्राएँ
(B) 11-13 मात्राएँ
(C) 11-11 मात्राएँ
(D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (C) 11-11 मात्राएँ

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
सोरठा एक मात्रिक अर्धसम छन्द है। यह दोहा छन्द का ठीक उल्टा होता है।

Step 2: Key Formula or Approach:
सोरठा की मात्रा गणना निम्न प्रकार है :
1. प्रथम चरण (विषम): 11 मात्राएँ
2. द्वितीय चरण (सम): 13 मात्राएँ
3. तृतीय चरण (विषम): 11 मात्राएँ
4. चतुर्थ चरण (सम): 13 मात्राएँ

Step 3: Detailed Explanation:
प्रश्न में केवल 'पहले' और 'तीसरे' चरणों के बारे में पूछा गया है।
उपरोक्त नियम के अनुसार, पहले और तीसरे दोनों चरणों में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

Step 4: Final Answer:
सही विकल्प (C) 11-11 मात्राएँ है।

Quick Tip

याद रखें: दोहा = 13-11; सोरठा = 11-13। (13-11 का उल्टा 11-13)।

---

14. 'सुगम' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है

(A) सु
(B) स
(C) सुग
(D) गम

Correct Answer: (A) सु

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं जो किसी मूल शब्द के पहले लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं।

Step 2: Key Formula or Approach:

$$\text{उपसर्ग} + \text{मूल शब्द} = \text{नया शब्द}$$

यहाँ शब्द है : सुगम
विग्रह: सु + गम

Step 3: Detailed Explanation:
'सु' एक संस्कृत उपसर्ग है जिसका अर्थ 'अच्छा' या 'सरल' होता है।
'गम' का अर्थ 'जाना' होता है।
अत: 'सुगम' का अर्थ हुआ - जहाँ जाना सरल हो।
यहाँ प्रथम शब्दांश 'सु' ही उपसर्ग है।

Step 4: Final Answer:
सही विकल्प (A) सु है।

Quick Tip

उपसर्ग अलग करने के बाद बचा हुआ शब्द (जैसे 'गम') हमेशा सार्थक होना चाहिए।

---

15. 'नवरत्न' में समास है

(A) कर्मधारय समास
(B) द्विगु समास
(C) तत्पुरुष समास
(D) अव्ययीभाव समास

Correct Answer: (B) द्विगु समास

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न हिन्दी व्याकरण के 'समास' विषय से संबंधित है, जहाँ दो शब्दों के मेल से बने नए शब्द का विश्लेषण किया जाता है।

Step 2: Key Formula or Approach:
द्विगु समास की परिभाषा के अनुसार, जिस सामासिक पद का प्रथम पद 'संख्यावाचक' (संख्या बताने वाला) हो और वह पूरे समूह का बोध कराए, वहाँ द्विगु समास होता है।

Step 3: Detailed Explanation:
'नवरत्न' शब्द का विग्रह करने पर हमें प्राप्त होता है :
नवरत्न = नौ रत्नों का समाहार (समूह)
यहाँ 'नव' (नौ) एक संख्या है और यह नौ रत्नों के समूह को प्रदर्शित कर रहा है।
अत:, नियमानुसार यह द्विगु समास का उदाहरण है।

Step 4: Final Answer:
सही विकल्प (B) द्विगु समास है।

Quick Tip

यदि शब्द का पहला हिस्सा गिनती (1, 2, 3...) बताए, तो वह अधिकांशत: द्विगु समास होता है। जैसे - चौराहा, त्रिफला, पंचवटी।

---

16. 'पृथ्वी' का पर्यायवाची शब्द नहीं है

(A) भू
(B) धरा
(C) वसुधा
(D) प्रसून

Correct Answer: (D) प्रसून

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न शब्द भण्डार के 'पर्यायवाची' (समानार्थी) शब्दों पर आधारित है, जहाँ हमें वह शब्द चुनना है जो अर्थ में भिन्न हो।

Step 2: Detailed Explanation:
पृथ्वी के प्रमुख पर्यायवाची शब्द निम्नलिखित हैं:
1. भू
2. धरा
3. वसुधा
4. भूमि, अवनि, इला, मेदिनी आदि।
विकल्प (D) में दिया गया शब्द 'प्रसून' पुष्प (फूल) का पर्यायवाची है।
अत: 'प्रसून' पृथ्वी का पर्यायवाची नहीं है।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (D) प्रसून है।

Quick Tip

परीक्षा में "है" और "नहीं है" को ध्यान से पढ़ें। 'प्रसून' फूल (पुष्प, सुमन, कुसुम) का पर्याय है, इसे पृथ्वी से भ्रमित न करें।

---

17. 'त्वाम्' शब्द में विभक्ति एवं वचन है

(A) द्वितीया विभक्ति, एकवचन
(B) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन
(C) षष्ठी विभक्ति, बहुवचन
(D) तृतीया विभक्ति, एकवचन

Correct Answer: (A) द्वितीया विभक्ति, एकवचन

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न संस्कृत व्याकरण के शब्द-रूपों (सर्वनाम) पर आधारित है। यहाँ 'युष्मद्' (तुम) शब्द के रूपों का ज्ञान आवश्यक है।

Step 2: Detailed Explanation:
'युष्मद्' शब्द के रूप इस प्रकार चलते हैं:
प्रथमा विभक्ति: त्वम् (तुम)
द्वितीया विभक्ति: त्वाम् / त्वा (तुमको)
अतः 'त्वाम्' शब्द द्वितीया विभक्ति का एकवचन रूप है।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (A) द्वितीया विभक्ति, एकवचन है।

Quick Tip

सर्वनाम रूपों (अस्मद्, युष्मद्) की तालिका याद करना अनिवार्य है। 'त्वाम्' और 'माम्' दोनों ही द्वितीया विभक्ति एकवचन के रूप हैं।

---

18. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद हैं

(A) चार
(B) आठ
(C) दो
(D) पाँच

Correct Answer: (B) आठ

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
हिन्दी व्याकरण में वाक्यों का वर्गीकरण दो आधारों पर किया जाता है : रचना के आधार पर और अर्थ के आधार पर।

Step 2: Detailed Explanation:
अर्थ के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित 8 भेद होते हैं:
1. विधानवाचक वाक्य
2. निषेधवाचक वाक्य
3. प्रश्नवाचक वाक्य
4. आज्ञावाचक वाक्य
5. इच्छावाचक वाक्य
6. विस्मयवाचक वाक्य
7. सन्देहवाचक वाक्य
8. संकेतवाचक वाक्य
रचना के आधार पर वाक्य के केवल 3 भेद (सरल, संयुक्त, मिश्र) होते हैं।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (B) आठ है।

Quick Tip

याद रखें: 'रचना' में 3 अक्षर हैं तो उसके आधार पर 3 भेद। 'अर्थ' के आधार पर 8 भेद होते हैं।

---

19. 'कर्तृवाच्य' में प्रधानता होती है

(A) क्रिया की
(B) विशेषण की
(C) कर्ता की
(D) कर्म की

Correct Answer: (C) कर्ता की

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
वाच्य (Voice) क्रिया के उस रूप को कहते हैं जिससे यह पता चले कि वाक्य में क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है या भाव है।

Step 2: Detailed Explanation:
वाच्य तीन प्रकार के होते हैं:
1. कर्तृवाच्य: इसमें क्रिया का सीधा संबंध कर्ता से होता है और कर्ता की प्रधानता होती है। क्रिया का लिंग और वचन कर्ता के अनुसार होता है।
2. कर्मवाच्य: इसमें कर्म की प्रधानता होती है।
3. भाववाच्य: इसमें क्रिया या भाव की प्रधानता होती है।
प्रश्न के अनुसार कर्तृवाच्य में कर्ता ही प्रधान होता है।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (C) कर्ता की है।

Quick Tip

नाम से ही स्पष्ट है : कर्तृ = कर्ता। कर्मवाच्य = कर्म। भाववाच्य = भाव।

---

20. जिनके अलग-अलग रूप वाक्यों में मिलते हैं, वे पद कहलाते हैं

(A) विकारी पद
(B) अविकारी पद
(C) प्रत्यय पद
(D) अन्वय पद

Correct Answer: (A) विकारी पद

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
शब्दों को उनके प्रयोग और रूपांतरण के आधार पर दो भागों में बाँटा गया है : विकारी और अविकारी।

Step 2: Detailed Explanation:
1. विकारी शब्द (पद): वे शब्द जिनके रूप लिंग, वचन, कारक या काल के अनुसार बदल जाते हैं (अर्थात् वाक्यों में अलग-अलग रूप मिलते हैं)। जैसे - संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया।
2. अविकारी शब्द (पद): वे शब्द जिनके रूप कभी नहीं बदलते, उन्हें अव्यय भी कहते हैं।
चूँकि प्रश्न में रूपों के बदलने (अलग-अलग रूप मिलने) की बात की गई है, इसलिए वे विकारी पद कहलाएंगे।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (A) विकारी पद है।

Quick Tip

'विकार' का अर्थ होता है 'परिवर्तन'। जो बदल जाए वह 'विकारी' और जो न बदले वह 'अविकारी' (अव्यय)।

गद्यांश (क):
जो वृद्ध हो गये हैं, जो अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था से दूर हट आए हैं, उन्हें अपने अतीतकाल की स्मृति बड़ी सुखद लगती है। वे अतीत का ही स्वप्न देखते हैं। तरुणों के लिए जैसे भविष्य उज्ज्वल

होता है, वैसे ही वृद्धों के लिए अतीत। वर्तमान से दोनों को असंतोष होता है। तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं। तरुण क्रान्ति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत गौरव के संरक्षक। इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है और इसी से वर्तमान काल सदैव सुधारों का काल बना रहता है।

21(क)(i). उपर्युक्त अवतरण के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(A) पाठ: क्या लिखूँ ?, लेखक: पदुमलाल पुन्नालाल 'बख्शी'
(B) पाठ: मित्रता, लेखक: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(C) पाठ: भारतीय संस्कृति, लेखक: डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
(D) पाठ: अजन्ता, लेखक: भगवतशरण उपाध्याय

Correct Answer: (A) पाठ: क्या लिखूँ ?, लेखक: पदुमलाल पुन्नालाल 'बख्शी'

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न दी गई गद्य पंक्तियों के आधार पर उनके मूल स्रोत (पाठ) और रचयिता की पहचान करने से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:
प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'क्या लिखूँ ?' नामक ललित निबंध से लिया गया है।
इस निबंध के लेखक प्रसिद्ध साहित्यकार श्री पदुमलाल पुन्नालाल 'बख्शी' जी हैं।
इस गद्यांश में लेखक ने युवा पीढ़ी (तरुण) और वृद्ध पीढ़ी के बीच वैचारिक अंतर और वर्तमान के प्रति उनके दृष्टिकोण का वर्णन किया है।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (A) है।

Quick Tip

जब भी गद्यांश में "तरुण", "वृद्ध", "अतीत" और "भविष्य" जैसे तुलनात्मक शब्दों का प्रयोग हो, तो वह प्रायः 'क्या लिखूँ ?' निबंध से होता है।

21(क)(ii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। (रेखांकित अंश : तरुणों के लिए जैसे भविष्य उज्ज्वल होता है, वैसे ही वृद्धों के लिए अतीत। तरुण क्रान्ति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत गौरव के संरक्षक।)

Correct Answer: व्याख्या नीचे दी गई है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न गद्यांश के विशिष्ट अंशों के भावार्थ और लेखक के संदेश को विस्तार से समझाने पर आधारित है।

Step 2: Detailed Explanation:
लेखक का मत है कि युवा पीढ़ी और वृद्ध पीढ़ी की सोच में बुनियादी अंतर होता है।
युवाओं की आँखों में भविष्य के सुनहरे सपने होते हैं, वे आने वाले कल को उज्ज्वल बनाने की इच्छा रखते हैं।
इसके विपरीत, वृद्ध लोग अपनी बीती हुई यादों (अतीत) में खोए रहते हैं और उन्हें बीता हुआ समय ही श्रेष्ठ लगता है।
जहाँ युवा समाज में परिवर्तन और क्रान्ति लाना चाहते हैं, वहीं वृद्ध लोग अपनी पुरानी परम्पराओं और गौरव की रक्षा करना चाहते हैं।
इसी खींचतान के कारण वर्तमान का समय हमेशा सक्रिय और बदलावों से भरा रहता है।

Step 3: Final Answer:
व्याख्या में युवाओं की प्रगतिशीलता और वृद्धों की रूढ़िवादिता के बीच के संघर्ष को दर्शाया गया है।

Quick Tip

व्याख्या करते समय "क्रान्ति" शब्द को नवीनता और "संरक्षक" शब्द को पुरानी मर्यादाओं से जोड़कर लिखें।

21(क)(iii). लेखक ने वर्तमान काल को सुधारों का काल क्यों कहा है ?

Correct Answer: वैचारिक द्वन्द्व के कारण उत्पन्न होने वाले परिवर्तनों के कारण।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न गद्यांश के निष्कर्ष पर आधारित है कि समाज में सुधार कैसे उत्पन्न होते हैं।

Step 2: Detailed Explanation:
लेखक के अनुसार, वर्तमान काल में दो विचारधाराओं का टकराव होता है।
एक ओर युवा शक्ति भविष्य के प्रति आशान्वित होकर व्यवस्था को बदलना चाहती है।
दूसरी ओर वृद्ध पीढ़ी अतीत के गौरव को बचाने का प्रयास करती है।
इन दोनों के बीच होने वाली टकराहट या संघर्ष से ही समाज में नई व्यवस्थाएँ जन्म लेती हैं।
अत:, यह निरंतर चलने वाला वैचारिक संघर्ष ही वर्तमान को 'सुधारों का काल' बनाता है।

Step 3: Final Answer:
तरुणों की क्रान्ति और वृद्धों के संरक्षण के द्वन्द्व से सुधार उत्पन्न होते हैं।

Quick Tip

उत्तर लिखते समय गद्यांश की अंतिम पंक्ति "इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है..." का सन्दर्भ अवश्य लें।

गद्यांश (ख):
ईर्ष्या का सम्बन्ध प्रतिद्वन्द्विता से होता है, क्योंकि भिखमंगा करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता। यह एक ऐसी बात है, जो ईर्ष्या के पक्ष में भी पड़ सकती है, क्योंकि प्रतिद्वन्द्विता से भी मनुष्य का विकास होता है। किन्तु, अगर आप संसार व्यापी सुयश चाहते हैं तो आप रसेल के मतानुसार, शायद नेपोलियन से स्पर्द्धा करेंगे। मगर, याद रखिए कि नेपोलियन भी सीजर से स्पर्द्धा करता था और सीजर सिकन्दर से तथा सिकन्दर हरकूलस से, जिस हरकूलस के बारे में इतिहासकारों का यह मत है कि वह कभी पैदा ही नहीं हुआ।

21(ख)(i). उपर्युक्त अवतरण के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(A) पाठ: मित्रता, लेखक: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(B) पाठ: ईर्ष्या, तू न गयी मेरे मन से, लेखक: रामधारी सिंह 'दिनकर'
(C) पाठ: ममता, लेखक: जयशंकर प्रसाद
(D) पाठ: क्या लिखूँ ?, लेखक: पदुमलाल पुन्नालाल 'बख्शी'

Correct Answer: (B) पाठ: ईर्ष्या, तू न गयी मेरे मन से, लेखक: रामधारी सिंह 'दिनकर'

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न दी गई पंक्तियों के आधार पर पाठ और उसके रचयिता की पहचान करने से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:
प्रस्तुत गद्यांश राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा लिखित प्रसिद्ध वैचारिक निबंध 'ईर्ष्या, तू न गयी मेरे मन से' से लिया गया है।
इस निबंध में लेखक ने ईर्ष्या की प्रकृति और उसके प्रभावों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है।

Step 3: Final Answer:
सही विकल्प (B) है।

Quick Tip

जहाँ कहीं भी "ईर्ष्या", "प्रतिद्वन्द्विता" या ऐतिहासिक पात्रों जैसे "नेपोलियन" और "सीजर" की बात हो, वह दिनकर जी का यह पाठ होगा।

21(ख)(ii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। (रेखांकित अंश : ईर्ष्या का सम्बन्ध प्रतिद्वन्द्विता से होता है... प्रतिद्वन्द्विता से भी मनुष्य का विकास होता है।)

Correct Answer: व्याख्या नीचे दी गई है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न ईर्ष्या और प्रतिद्वन्द्विता (Competition) के बीच के संबंध को स्पष्ट करने पर आधारित है।

Step 2: Detailed Explanation:
लेखक का मानना है कि ईर्ष्या हमेशा अपने बराबर वालों या अपने क्षेत्र के लोगों से होती है।
उदाहरण के लिए, एक गरीब भिखारी कभी अमीर व्यक्ति से ईर्ष्या नहीं करता क्योंकि उनके बीच कोई प्रतिद्वन्द्विता नहीं है।
लेखक ईर्ष्या के सकारात्मक पहलू पर ध्यान देते हुए कहते हैं कि जब यह प्रतिद्वन्द्विता का रूप लेती है, तो मनुष्य आगे बढ़ने की कोशिश करता है।
स्वस्थ प्रतियोगिता मनुष्य को नई ऊँचाइयाँ छूने के लिए प्रेरित करती है, जिससे उसका विकास होता है।

Step 3: Final Answer:
ईर्ष्या जब स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बन जाती है, तो वह उन्नति का आधार बनती है।

Quick Tip

व्याख्या में "भिखमंगा" और "करोड़पति" के उदाहरण का प्रयोग करके स्पष्टता लाएं।

21(ख)(iii). लेखक के अनुसार प्रतिद्वन्द्विता का सकारात्मक पक्ष क्या है ?

Correct Answer: प्रतिद्वन्द्विता मनुष्य के विकास में सहायक होती है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न गद्यांश के माध्यम से यह समझने पर आधारित है कि ईर्ष्या कब उपयोगी हो सकती है।

Step 2: Detailed Explanation:
लेखक के अनुसार प्रतिद्वन्द्विता हमेशा बुरी नहीं होती।
यदि यह ईर्ष्या द्वेष में न बदलकर स्वयं को सुधारने की होड़ में बदल जाए, तो यह विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।
किसी श्रेष्ठ व्यक्ति से स्पर्द्धा करना मनुष्य को अपने कार्य में निपुण बनाने और अधिक परिश्रम करने के लिए प्रेरित करता है।
यही प्रतिद्वन्द्विता का सकारात्मक पक्ष है।

Step 3: Final Answer:
प्रतिद्वन्द्विता के कारण ही मनुष्य स्वयं को बेहतर बनाता है और प्रगति करता है।

Quick Tip

प्रतिद्वन्द्विता का सकारात्मक अर्थ 'स्वस्थ प्रतियोगिता' (Healthy Competition) से है।

पद्यांश (क):
मैय्या हौं न चरैहौं गाइ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों, मेरे पाइ पिराइ।
जौ न पत्याहि पूँछि बलदाउहिं, अपनी सौंह दिवाइ।
यह सुनि माइ जसोदा ग्वालिनि, गारी देति रिसाइ।
मैं पठवति अपने लरिका कौं, आवै मन बहराइ।
सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ।

22(क)(i). उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Correct Answer: सन्दर्भ नीचे दिया गया है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
सन्दर्भ का अर्थ है काव्य पंक्तियों के रचयिता और उनके मूल ग्रंथ की जानकारी देना।

Step 2: Detailed Explanation:
प्रस्तुत पद्यांश 'कृष्ण भक्ति' शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि 'सूरदास' द्वारा रचित 'सूरसागर' महाकाव्य के 'पद' शीर्षक से लिया गया है।
इसमें बालक कृष्ण की बाल-सुलभ शिकायतों और यशोदा माता के वात्सल्य भाव का वर्णन है।

Step 3: Final Answer:
प्रस्तुत पद हमारी पाठ्यपुस्तक के 'पद' नामक शीर्षक से उद्धृत है, जिसके रचयिता सूरदास जी हैं।

Quick Tip

पद्यांश के अंत में अक्सर कवि का नाम (जैसे 'सूर') लिखा होता है, जिससे पहचान आसान हो जाती है।

22(क)(ii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। (रेखांकित अंश : सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों, मेरे पाइ पिराइ। सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ।)

Correct Answer: व्याख्या नीचे दी गई है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
बाल कृष्ण अपनी माता से ग्वालों द्वारा परेशान किए जाने की शिकायत कर रहे हैं।

Step 2: Detailed Explanation:
श्रीकृष्ण माता यशोदा से कहते हैं कि "हे माँ! अब मैं गाय चराने नहीं जाऊँगा।
सारे ग्वाले मुझसे ही अपनी गायों को घेरने (पकड़ने) के लिए कहते हैं, जिससे दौड़ते-दौड़ते मेरे पैरों में दर्द होने लगा है।"
दूसरी ओर, माता यशोदा क्रोधित होकर कहती हैं कि "मैं तो अपने बालक को मन बहलाने के लिए भेजती हूँ,
परन्तु ये ग्वाले मेरे इस नन्हे से बालक को इधर-उधर दौड़ाकर मार डालते हैं (परेशान कर देते हैं)।"

Step 3: Final Answer:
यशोदा माँ का वात्सल्य और कृष्ण की थकावट का सुंदर चित्रण यहाँ किया गया है।

Quick Tip

'पाइ पिराइ' का अर्थ है पैरों का दर्द करना। ब्रजभाषा के इन शब्दों का सटीक अर्थ व्याख्या को प्रभावी बनाता है।

22(क)(iii). बाल कृष्ण गाय चराने क्यों नहीं जाना चाहते हैं ?

Correct Answer: ग्वालों द्वारा परेशान किए जाने और पैरों में दर्द होने के कारण।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न कृष्ण के गाय न चराने जाने के कारणों के स्पष्टीकरण से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:
बाल कृष्ण गाय चराने इसलिए नहीं जाना चाहते क्योंकि वन में अन्य ग्वाल-बाल उनसे ही गायों को हँकवाते हैं।
दिन भर दौड़-धूप करने के कारण उनके कोमल पैरों में बहुत पीड़ा होने लगती है।
साथ ही, वे ग्वालों के व्यवहार से दुखी और चिड़चिड़े हो गए हैं।

Step 3: Final Answer:
अत्यधिक थकावट और ग्वालों के तंग करने के कारण कृष्ण ने वन जाने से मना कर दिया।

Quick Tip

उत्तर में 'पाइ पिराइ' और 'रिंगाइ' (दौड़ाना) शब्दों का उल्लेख करना प्रभावी रहता है।

पद्यांश (ख):
चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक।

22(ख)(i). उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Correct Answer: सन्दर्भ नीचे दिया गया है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह पद्यांश राष्ट्रीय चेतना के सुप्रसिद्ध कवि की रचना की पहचान से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:
प्रस्तुत पंक्तियाँ 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से प्रसिद्ध कवि 'माखनलाल चतुर्वेदी' द्वारा रचित 'पुष्प की अभिलाषा' कविता से ली गई हैं।

यह कविता उनके काव्य संग्रह 'युग-चरण' में संकलित है।

Step 3: Final Answer:
प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'पुष्प की अभिलाषा' नामक शीर्षक से लिया गया है, जिसके रचयिता माखनलाल चतुर्वेदी हैं।

Quick Tip

माखनलाल चतुर्वेदी को "एक भारतीय आत्मा" (A Indian Soul) उपनाम से भी जाना जाता है।

22(ख)(ii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। (रेखांकित अंश : मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ में देना तुम फेंक। मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।)

Correct Answer: व्याख्या नीचे दी गई है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह व्याख्या फूल के माध्यम से व्यक्त किए गए देशप्रेम और त्याग के भाव को स्पष्ट करती है।

Step 2: Detailed Explanation:
फूल माली से प्रार्थना करता है कि उसे न तो सम्राटों के शवों पर चढ़ना है और न ही देवताओं की मूर्तियों पर।
उसकी एकमात्र इच्छा है कि माली उसे तोड़कर उस रास्ते पर बिखेर दे,
जिस रास्ते से होकर देश के वीर सिपाही मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना बलिदान देने जाते हैं।
फूल वीर सैनिकों के पैरों के नीचे आकर भी स्वयं को गौरवान्वित महसूस करना चाहता है।

Step 3: Final Answer:
फूल ने देश के वीरों के चरणों की धूल बनने को अपना सर्वोच्च सम्मान माना है।

Quick Tip

इस व्याख्या में "त्याग" और "देशभक्ति" के भाव को प्रमुखता से लिखना चाहिए।

22(ख)(iii). उपर्युक्त अवतरण में पुष्प किसका प्रतीक है ? पुष्प को किन चीजों की चाह नहीं है, और क्यों ?

Correct Answer: पुष्प एक देशप्रेमी का प्रतीक है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न पद्यांश के प्रतीकार्थ और उसके केन्द्रीय भाव को समझने पर आधारित है।

Step 2: Detailed Explanation:
यहाँ पुष्प एक सच्चे देशभक्त और बलिदान का प्रतीक है।
पुष्प को अप्सराओं के गहनों, प्रेमियों की मालाओं, राजाओं के मृत शरीरों या देवताओं के मस्तक पर चढ़ने की चाह नहीं है।
इसका कारण यह है कि ये सभी भोग-विलास और व्यक्तिगत मान-सम्मान की वस्तुएँ हैं।
पुष्प की दृष्टि में मातृभूमि के लिए प्राण न्योछावर करने वाले सैनिकों का सम्मान इन सबसे कहीं ऊँचा है।

Step 3: Final Answer:
पुष्प भौतिक सुखों की जगह वीरों के सम्मान को प्राथमिकता देता है।

Quick Tip

पुष्प का त्याग भारतीय जनमानस की निःस्वार्थ सेवा भावना को दर्शाता है।

23(क). 'विश्वस्य स्रष्टा ईश्वर : एक एव' इति भारतीयसंस्कृते : मूलम्। विभिन्नमतावलम्बिन : विविधै : नामभि : एकम् एव ईश्वरं भजन्ते। अग्नि :, इन्द्र :, कृष्ण :, करीम :, राम :, रहीम :, जिन :, बुद्ध:, ख्रिस्त :, अल्लाह : इत्यादीनि नामानि एकस्य एव परमात्मन : सन्ति। तम् एव ईश्वरं जना : गुरु: इत्यपि मन्यते। अत : सर्वेषां मतानां समभाव : सम्मानश्च अस्माकं संस्कृते : सन्देश :। (सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए)

Correct Answer: हिन्दी अनुवाद नीचे दिया गया है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न संस्कृत गद्यांश का सन्दर्भ सहित हिन्दी अनुवाद करने से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:
सन्दर्भ: यह गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'भारतीय संस्कृतिः' नामक पाठ से लिया गया है।
हिन्दी अनुवाद :
विश्व की रचना करने वाला ईश्वर एक ही है, यही भारतीय संस्कृति का मूल आधार है।
विभिन्न मतों (धर्मों) को मानने वाले लोग अलग-अलग नामों से एक ही ईश्वर की पूजा करते हैं।
अग्नि, इन्द्र, कृष्ण, करीम, राम, रहीम, जिनेन्द्र, बुद्ध, ईसा मसीह और अल्लाह आदि नाम एक ही

परमात्मा के हैं।
उसी ईश्वर को लोग गुरु के रूप में भी मानते हैं।
अत: सभी मतों के प्रति समान भाव और सम्मान ही हमारी संस्कृति का संदेश है।

Step 3: Final Answer:
भारतीय संस्कृति 'एकम सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' के सिद्धान्त पर आधारित है।

Quick Tip

'विश्वस्य स्रष्टा' का अर्थ है 'संसार का निर्माता' और 'समभाव' का अर्थ है 'समान दृष्टिकोण'।

23(ख). ताडित : चन्द्रशेखर : पुन : पुन : 'भारतं जयतु' इति वदति। (एवं स पञ्चदशकशाघातै : ताडित :) यदा चन्द्रशेखर : कारागारात् मुक्त : बहि : आगच्छति, तदैव सर्वे जना : तं परित : वेष्टयन्ति, बहव : बालका : तस्य पादयो : पतन्ति, तं मालाभि : अभिनन्दयन्ति च। (सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए)

Correct Answer: हिन्दी अनुवाद नीचे दिया गया है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद के वीरतापूर्ण प्रसंग के संस्कृत वर्णन का अनुवाद है।

Step 2: Detailed Explanation:
सन्दर्भ: यह गद्यांश 'चन्द्रशेखर: आजाद:' या 'देशभक्त: चन्द्रशेखर:' नामक पाठ से लिया गया है।
हिन्दी अनुवाद :
कोड़ों से पीटे जाते हुए चन्द्रशेखर बार-बार "भारत की जय हो" ऐसा कहते थे।
(इस प्रकार उन्हें पन्द्रह कोड़ों की सजा दी गई।)
जब चन्द्रशेखर जेल से छूटकर बाहर आए, तभी सब लोगों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया।
बहुत से बालक उनके पैरों पर गिर पड़े और लोगों ने फूलों की मालाओं से उनका स्वागत किया।

Step 3: Final Answer:
यह अंश आजाद की निर्भीकता और जनता के उनके प्रति प्रेम को दर्शाता है।

Quick Tip

'परित:' शब्द का अर्थ 'चारों ओर' और 'वेष्टयन्ति' का अर्थ 'घेर लेते हैं' होता है।

24(क). नितरां नीचोऽस्मीति त्वं खेदं कूप ! कदापि मा कृथा :।
अत्यन्तसरसहृदयो यत : परेषां गुणग्रहीताऽसि।। (सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए)

Correct Answer: हिन्दी अनुवाद नीचे दिया गया है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह एक सूक्ति (श्लोक) है जिसमें अन्योक्ति के माध्यम से गहरे अर्थ को समझाया गया है।

Step 2: Detailed Explanation:
सन्दर्भ: प्रस्तुत श्लोक 'अन्योक्तिविलासः' नामक पाठ से लिया गया है।
हिन्दी अनुवाद :
"हे कुएँ! मैं बहुत नीचा (गहरा) हूँ, ऐसा सोचकर तुम कभी दुखी मत होओ।
क्योंकि तुम अत्यंत सरस (जल से युक्त/कोमल) हृदय वाले हो और दूसरों के गुणों (रस्सियों) को ग्रहण करने वाले हो।"
अर्थान्तर : विद्वान व्यक्ति को भी अपनी विनम्रता (नीचा होना) पर दुखी नहीं होना चाहिए क्योंकि वह गुणवान होता है।

Step 3: Final Answer:
यहाँ कुएँ के माध्यम से विनम्र और गुणी व्यक्ति की प्रशंसा की गई है।

Quick Tip

यहाँ 'गुण' शब्द के दो अर्थ हैं: कुएँ के सन्दर्भ में 'रस्सी' और व्यक्ति के सन्दर्भ में 'अच्छे गुण'।

24(ख). सार्थः प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः। (सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए)

Correct Answer: हिन्दी अनुवाद नीचे दिया गया है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह श्लोकांश 'जीवन-सूत्राणि' या यक्ष-युधिष्ठिर संवाद से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:
सन्दर्भ: यह श्लोकांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'जीवन-सूत्राणि' नामक पाठ से लिया गया है।
हिन्दी अनुवाद :
"प्रवास (विदेश यात्रा) के समय साथ चलने वाला दल या साथी ही मित्र होता है।
और घर में रहने वाले व्यक्ति की मित्र उसकी पत्नी होती है।"

Step 3: Final Answer:
विभिन्न परिस्थितियों में मित्रों की पहचान यहाँ बताई गई है।

Quick Tip

'सार्थः' का अर्थ है यात्रियों का समूह या सहयात्री।

25(क)(i). 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के 'पंचम सर्ग' की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

Correct Answer: पंचम सर्ग की कथावस्तु नीचे दी गई है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य श्री अशोक कुमार अग्रवाल द्वारा रचित है, जो महात्मा गाँधी के जीवन और उनके स्वतंत्रता संघर्ष पर आधारित है।

Step 2: Detailed Explanation:
मुक्तिदूत के पंचम सर्ग में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' और देश की स्वाधीनता का वर्णन है।
द्वितीय विश्व युद्ध के समय अंग्रेजों की दमनकारी नीति बढ़ गई थी।
गाँधी जी ने वर्ष 1942 में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा दिया और 'करो या मरो' का आह्वान किया।
इस सर्ग में कस्तूरबा गाँधी के निधन और गाँधी जी की जेल यात्रा का भी मार्मिक चित्रण है।
अंततः गाँधी जी के अहिंसात्मक प्रयासों से 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ, जिसका गौरवमयी गान इस सर्ग में किया गया है।

Step 3: Final Answer:
पंचम सर्ग गाँधी जी के अंतिम संघर्ष और स्वतंत्रता प्राप्ति की ऐतिहासिक घटना को समर्पित है।

Quick Tip

खण्डकाव्य के उत्तर में सर्ग के मुख्य कथानक के साथ-साथ महत्वपूर्ण तिथियों (जैसे 1942, 1947) का उल्लेख अवश्य करें।

25(क)(ii). 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के आधार पर 'महात्मा गाँधी' के चरित्र की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

Correct Answer: चरित्र-चित्रण नीचे दिया गया है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न काव्य के नायक के गुणों और उनके व्यक्तित्व के विश्लेषण पर आधारित है।

Step 2: Detailed Explanation:
गाँधी जी के चरित्र की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:
1. **सत्य और अहिंसा के पुजारी :** गाँधी जी का पूरा जीवन सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित था।
2. **निर्भीक और दृढ़निश्चयी :** वे अंग्रेजों की दमनकारी शक्ति से डरे नहीं और अपने लक्ष्य पर अडिग रहे।
3. **मानवतावादी :** वे छुआछूत और ऊँच-नीच के घोर विरोधी थे तथा हरिजनों के उत्थान के लिए समर्पित रहे।
4. **देशभक्त :** उनके हृदय में देश की आजादी के लिए असीम तड़प थी, जिसके लिए उन्होंने अपना सर्वस्व त्याग दिया।

Step 3: Final Answer:
गाँधी जी एक युगपुरुष और विश्ववंद्य नेता के रूप में चित्रित किए गए हैं।

Quick Tip

चरित्र-चित्रण लिखते समय मुख्य बिन्दुओं को शीर्षकों (Headings) में लिखें, इससे अंक प्राप्त करना आसान होता है।

26(क)(i). निम्नलिखित लेखकों में से किसी एक लेखक का जीवन परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए : रामधारी सिंह 'दिनकर'

Correct Answer: जीवन परिचय नीचे दिया गया है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न हिन्दी साहित्य के प्रमुख गद्यकारों के जीवन वृत्त और उनके साहित्यिक योगदान की जानकारी पर आधारित है।

Step 2: Detailed Explanation:
जीवन परिचय : राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 30 सितम्बर, 1908 ई० को बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया ग्राम में हुआ था।
उनके पिता का नाम बाबू रवि सिंह था।
दिनकर जी को 'ओज' का कवि माना जाता है। उन्होंने राज्यसभा के सदस्य के रूप में भी सेवा की।
भारत सरकार ने उन्हें 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया।

वर्ष 1974 ई० में इस महान साहित्यकार का निधन हो गया।
प्रमुख रचना : 'उर्वशी' (इस कृति पर उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ)।

Step 3: Final Answer:
दिनकर जी आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि और प्रखर निबंधकार थे।

Quick Tip

जीवन परिचय में जन्म स्थान, माता-पिता का नाम और मुख्य सम्मान (जैसे ज्ञानपीठ) लिखना अनिवार्य है।

26(ख)(ii). निम्नलिखित कवियों में से किसी एक कवि का जीवन परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए : मैथिलीशरण गुप्त

Correct Answer: जीवन परिचय नीचे दिया गया है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि के जीवन और कृतित्व पर आधारित है।

Step 2: Detailed Explanation:
जीवन परिचय : राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई० में झाँसी जिले के चिरगाँव नामक स्थान पर हुआ था।
इनके पिता का नाम सेठ रामचरण गुप्त था।
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को ये अपना गुरु मानते थे।
इनकी रचनाओं में राष्ट्रभक्ति की प्रधानता के कारण महात्मा गाँधी ने इन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि दी थी।
सन् 1964 ई० में इनका देहावसान हो गया।
प्रमुख रचना : 'साकेत' (रामकथा पर आधारित महाकाव्य)।

Step 3: Final Answer:
गुप्त जी खड़ी बोली हिन्दी को काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले कवियों में अग्रणी हैं।

Quick Tip

गुप्त जी के गुरु 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी' का नाम लिखने से उत्तर की गुणवत्ता बढ़ जाती है।

27. अपनी पाठ्य-पुस्तक में से कण्ठस्थ कोई एक श्लोक लिखिए, जो इस प्रश्न पत्र में न आया हो।

Correct Answer: श्लोक नीचे दिया गया है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह प्रश्न विद्यार्थी की स्मरण शक्ति और संस्कृत श्लोक के शुद्ध लेखन की क्षमता का परीक्षण करता है।

Step 2: Detailed Explanation:
नीचे दिया गया श्लोक 'भारतीय संस्कृतिः' पाठ से लिया गया है :

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।

अर्थः सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त हों, सभी का कल्याण हो और कोई भी दुखी न हो।

Step 3: Final Answer:
लिखा गया श्लोक पाठ्यपुस्तक का एक मानक श्लोक है।

Quick Tip

श्लोक लिखते समय विसर्ग (:) और हलन्त (्) का विशेष ध्यान रखें, क्योंकि छोटी सी त्रुटि पर अंक कट जाते हैं।

---

28. अपने निवास स्थान के आसपास / मोहल्ले की नालियों की समुचित सफाई के लिए नगर/जनपद के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

Correct Answer: प्रार्थना पत्र का प्रारूप नीचे दिया गया है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:
यह एक औपचारिक पत्र (Formal Letter) है जो संबंधित अधिकारी को जनसमस्या से अवगत कराने हेतु लिखा जाता है।

Step 2: Detailed Explanation:
सेवा में,
मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी,
नगर निगम, [शहर का नाम]।
विषय : मोहल्ले की नालियों की सफाई हेतु प्रार्थना पत्र।
महोदय,
मैं आपका ध्यान हमारे क्षेत्र [मोहल्ले का नाम] की नारकीय स्थिति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। पिछले कई दिनों से नालियों की सफाई नहीं हुई है, जिसके कारण गंदा पानी सड़कों पर बह रहा है। इससे भयंकर दुर्गन्ध फैल रही है और मच्छर पनप रहे हैं, जिससे बीमारियों का खतरा बढ़ गया है। अत: आपसे विनम्र निवेदन है कि जनहित में अविलम्ब सफाई की व्यवस्था कराने की कृपा करें।
धन्यवाद।
भवदीय,
आपका नाम / क्षेत्रवासी

दिनांक: [आज की तिथि]

Step 3: Final Answer:
पत्र का यह प्रारूप स्पष्ट और विनम्र है, जो समस्या के समाधान की माँग करता है।

Quick Tip

औपचारिक पत्र में 'विषय' (Subject) लिखना कभी न भूलें, यह पत्र का सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है।